क़ीमत 5 रूपया

http://www.cgpi.org

आने वाले इंक़लाबी तूफ़ानों के लिये तैयारी करें!

मज़दूर एकता लहर

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का अख़बार

ग्रंथ-37, अंक - 14 | जुलाई 16-31, 2023 | पाक्षिक अख़बार | कुल पृष्ठ-6

न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी क्यों आवश्यक है?

आर्थिक मामलों पर कैबिनेट की समिति ने 7 जून को 2023–24 की ख़रीफ़ (गर्मी) और रबी (सर्दी) दोनों मौसमों के कई कृषि उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) को मंजूरी दी। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और प्रधानमंत्री मोदी, दोनों ने घोषणा की कि एम.एस.पी. में की गई वृद्धि सामान्य से अधिक है और इससे किसानों को लाभ होगा।

हाल के वर्षों में कुछ प्रमुख फ़सलों के लिए घोषित किये गये न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) को दी गयी तालिका में दिखाया गया है। पिछले साल की तुलना में इस साल के लिये घोषित की गई एम.एस.पी. में इस प्रकार वृद्धि हुई है – मूंगफली (9 प्रतिशत), सरसों (8 प्रतिशत) और अरहर दाल (6 प्रतिशत)। इसके बावजूद इन फ़सलों की खेती करने वाले किसान खुश नहीं हैं क्योंकि उन्हें अपने अनुभव से पता है कि सरकार द्वारा घोषित की गई क़ीमतें प्राप्त होने की संभावना कम ही है।

चार्ट क, बी, सी और डी में पेश किये गए आंकड़े, विभिन्न राज्यों में क्रमशः मूंगफली, अरहर दाल, सरसों और सूरजमुखी की एम.एस.पी. तथा हक़ीक़त में मिलने वाली क़ीमतों को दिखाते हैं। चार्ट में कुछ राज्यों के लिये खेत की फ़सल की क़ीमत (फॉर्म हारवेस्ट प्राइस या एफ.एच.पी.) की तुलना की गयी है, जिन राज्यों में किसान इन उत्पादों का बड़ा हिस्सा पैदा करते हैं। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा हर साल प्रकाशित एफ.एच.पी. किसानों को उनकी उपज के लिए मिलने वाली क़ीमतों को दर्शाती हैं। एफ.एच.पी., आमतौर पर किसानों को मिलने वाली औसत क़ीमत से अधिक होती है (एफ.एच.पी. पर बॉक्स देखें)।

कई वर्षों में एफ.एच.पी. एम.एस.पी. से नीचे ही रहा है। किसानों को मिलने वाली वास्तविक क़ीमतें आधिकारिक तौर पर प्रकाशित एफ.एच.पी. से कम होती हैं। चार्ट क से पता चलता है कि गुजरात में मूंगफली के पिछले आठ वर्षों के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, एम.एस.पी. से काफी कम थी। राजस्थान में पिछले आठ सालों में से सात सालों में, यह एम.एस.पी. से कम रही है। आंध्र प्रदेश में भी पिछले आठ सालों में से पांच सालों में, यह एफ.एच.पी., एम.एस.पी. से कम रही है।

शेष पृष्ठ 3 पर

ख़रीफ़ फ़सलें	19-20	20-21	21-22	22-23	23-24
धान (सामान्य) – चावल	1815	1868	1940	2040	2183
अरहर/तूअर दाल	5800	6000	6300	6600	7000
मूंगफली	5090	5275	5550	5850	6377
सूरजमुखी	5650	5885	6015	6400	6760
रबी फ़सलें					
गेहूं	1925	1975	1975	2015	2125
चना	4875	5100	5100	5230	5335
सरसों	4425	4650	4650	5050	5450

चार्ट क – मूंगफली की कीमतें एम.एस.पी. और एफ.एच.पी.

रूपये प्रति क्विंटल

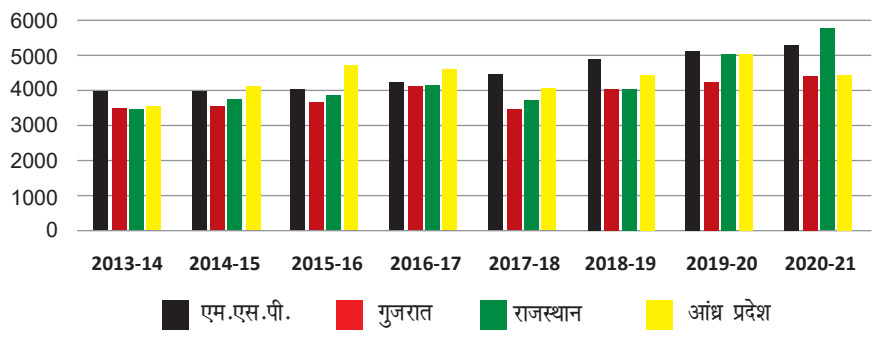

'महिलाओं पर बढ़ता यौन शोषण' के विषय पर चर्चा

मज़दूर एकता कमेटी के संवाददाता की रिपोर्ट

9 जुलाई, 2023 को दक्षिण दिल्ली के ओखला औद्योगिक क्षेत्र में मज़दूर एकता कमेटी ने एक चर्चा का आयोजन किया। इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं, पुरुषों, नौजवान लड़के और लड़कियों ने हिस्सा लिया।

मज़दूर एकता कमेटी के एक कार्यकर्ता ने चर्चा का संचालन किया।

चर्चा की शुरुआत एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति से हुई। प्रस्तुति में आंकड़ों के ज़रिए समझाया गया कि देशभर में महिलाओं के ख़िलाफ़ भेदभाव, यौन शोषण व हिंसा के मामले बढ़ रहे हैं। महिलाएं सड़क, घर, स्कूल–कालेज, खेल के मैदानों से लेकर कारखानों, कंपनियों और आफिसों में – कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। राज्य द्वारा आयोजित सांप्रदायिक हिंसा में महिलाओं को बलात्कार और हिंसा का सामना करना पड़ता है, जैसा कि 1984 में हुये सिखों के क़त्लेआम व 2002 के गुजरात में हुये क़त्लेआम में देखा गया है।

प्रस्तुति में बताया गया कि हम मज़दूरों के पास चुनाव में अपने उम्मीदवारों का चयन करने की कोई शक्ति नहीं है। बड़े–बड़े औद्योगिक घरानों के मालिक पूंजीपतियों की भरोसेमंद राजनीतिक पार्टियां उन लोगों को अपना उम्मीदवार बनाती हैं, जिन पर अक्सर पहले से ही अपराधिक मामले दर्ज़ होते हैं। पूंजीपति अपने धनबल, बाहुबल तथा मीडिया बल के सहारे, अपने कार्यक्रम को सबसे बेहतर तरीक़े से लागू करने वाली पार्टी को चुनाव में जिताते हैं। हम न तो चुने गए प्रतिनिधियों पर सवाल उठा सकते हैं और न ही उन्हें वापस बुला सकते हैं। ऐसे में, यह सवाल उठता है कि : क्या इन अपराधी सत्ताधारियों से महिलाओं के लिये न्याय की उम्मीद रखना सही होगा? हमारे सामने विकल्प क्या है?

मज़दूर एकता कमेटी की ओर से बिरजू नायक ने इन सवालों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जब महिलाएं अपने ऊपर बढ़ते अपराध के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाती हैं, तब उनके ही चरित्र पर सवाल उठाया जाता है। अदालत में पीड़िता को ही दोषी ठहराया जाता है।

उन्होंने राजस्थान की भंवरी देवी का उदाहरण दिया, जिसने 1992 में बालविवाह को रोकने का साहसिक क़दम उठाया था। इसके लिए उसका बलात्कार किया गया। अदालत, पुलिस और सरकार ने इंसाफ देने की बजाय उसे ही सवालों के घेरे में खड़ा कर दिया!

बिरजू नायक ने हाल में हुये, महिला पहलवानों के संघर्ष का उदाहरण भी दिया। अगर यौन शोषण का आरोपी सत्ता में ऊंचे पद पर है, तो उसे बचा लिया जाता है।

उन्होंने बताया कि मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था के चलते, महिला को एक उपभोग की वस्तु माना जाता है। महिलाओं के साथ हर स्तर पर भेदभाव और शोषण होता है। महिलाएं जिन फैक्ट्रियों में काम करने जाती हैं, वहां भी उन्हें पुरुषों से कम वेतन देकर पूंजीपति उनका शोषण करते हैं। और इस तरह, सभी मज़दूरों के वेतनों को कम करने की कोशिश करते हैं। पूंजीपतियों को महिलाओं के शोषण–दमन से सीधा फ़ायदा है।

महिलाओं को अपने ख़िलाफ़ हो रहे भेदभाव व अपराध को रोकने के लिए, पुरुषों के साथ मिलकर, समाज में हर प्रकार के शोषण–दमन और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ संघर्ष में आगे आना होगा। महिलाओं व पुरुषों – सभी मज़दूर–मेहनतकशों को पूंजीवादी व्यवस्था की जगह पर अपनी हुकूमत क़ायम करनी होगी और हर प्रकार के शोषण–दमन को ख़त्म करना होगा। ऐसा करके ही महिलाओं की मुक्ति का रास्ता खुलेगा।

प्रस्तुति और मज़दूर एकता कमेटी के संबोधन पर सभी भागीदारों में गंभीर चर्चा हुयी।

महिलाओं की सुरक्षा की गारंटी न देने के लिए और महिलाओं पर अपराध करने वालों को छूट देने के लिए राज्य की कड़ी निंदा की गयी। सत्ता के ऊंचे पदों पर बैठे प्रभावशाली लोगों, जिन पर बलात्कार और यौन हिंसा का आरोप है, उन्हें बचाने की राज्य और न्यायालयों की कोशिशों की कड़ी निंदा की गयी।

चर्चा इस सहमति से समाप्त हुयी, कि महिलाओं व पुरुषों को कंधे से कंधा मिलाकर, हर प्रकार के शोषण और अन्याय के ख़िलाफ़ संघर्ष करना होगा और पूंजीवादी शोषण–दमन को ख़त्म करने के लिए लड़ना होगा।

http://hindi.cgpi.org/23776

अंदर पढ़ें

- नाटो का शिखर सम्मेलन 2
- मध्यप्रदेश में नर्सों की हड़ताल 4
- झारखण्ड के ग्रामीण कार्यकर्ता संघर्ष के रास्ते पर 4
- पाठकों की प्रतिक्रिया 4
- विशाखापट्टनम में दवा कंपनी में भयानक आग 5
- प्रोटेरियल इंडिया के मज़दूरों का संघर्ष 5

लिथुआनिया के विलनियस में नाटो का शिखर सम्मेलन :

सैन्यीकरण और युद्ध में और अधिक बढ़ोतरी

11 और 12 जुलाई को उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के 31 सदस्य देशों के राज्य प्रमुखों की बैठक लिथुआनिया के विलनियस शहर में हुई। 12 जुलाई को नाटो शिखर सम्मेलन द्वारा सदस्य देशों की ओर से एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई। विज्ञप्ति के अनुसार, सदस्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं का और सैन्यीकरण करने तथा रूस के ख़िलाफ़ यूक्रेन में चल रहे क्रूर युद्ध में तेज़ी लाने के लिए, एक रोड–मैप की घोषणा की गई। इस विज्ञप्ति के ज़रिये, अफ्रीका और एशिया में अपने प्रभुत्व क्षेत्र को बढ़ाने की नाटो की योजना भी उजागर हुई।

नाटो अमरीका के नेतृत्व वाला एक सैन्य गठबंधन है। हालांकि यह काल्पनिक धारणा बनाई गयी है कि नाटो की सेनाएं, एक संयुक्त कमान के अधीन हैं, जबकि हक़ीक़त में सदस्य देशों की सशस्त्र सेनाएं, अमरीकी सशस्त्र बलों की कमान के अधीन हैं। नाटो सैन्य गठबंधन, यूरोप के देशों और लोगों पर, अमरीकी प्रभुत्व को सुनिश्चित करने और उस प्रभुत्व को दुनिया के अन्य हिस्सों तक विस्तारित करने का एक ज़रिया रहा है।

नाटो के शिखर सम्मेलन ने यूक्रेन में चल रहे युद्ध को बढ़ाने के उपायों की घोषणा की। इसने घोषणा की कि "यूक्रेन का भविष्य नाटो में है"। उसने यूक्रेन को तुरंत, नाटो की औपचारिक सदस्यता न देते हुए, यूक्रेन की सदस्यता–प्रक्रिया को तेज़ करने का रोड–मैप सामने रखा। शिखर सम्मेलन ने, रूस के ख़िलाफ़ चल रहे युद्ध में यूक्रेन के साथ नाटो का पूर्ण और क़रीबी समन्वय सुनिश्चित करने के लिए नाटो–यूक्रेन परिषद की स्थापना की।

यूक्रेन और रूस के बीच का यह युद्ध 15 महीने से भी अधिक समय से चल रहा है, जिसने वहां भयंकर मौत और तबाही फैलाई है। इस युद्ध में सैनिकों के अलावा, लाखों आम नागरिक भी मारे गए हैं। यूक्रेन के दो करोड़ से अधिक लोगों यानी कि आधी आबादी को शरणार्थियों के रूप में रूस सहित अनेक पड़ोसी देशों में जाना पड़ा है। हालांकि, अमरीका नहीं चाहता कि यह युद्ध ख़त्म हो। उसने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर, युद्ध रोकने और शांति सुनिश्चित करने के सभी प्रयासों को नाकाम कर दिया है। (देखें बॉक्स : बातचीत से समाधान की कूटनीतिक पहल को बार–बार नाकाम किया गया)। अमरीका और उसके सहयोगियों ने युद्ध जारी रखने के लिए यूक्रेनी सशस्त्र बलों को सबसे परिष्कृत हथियार दिए हैं।

11–12 जुलाई को हुये नाटो के शिखर सम्मेलन में, यूक्रेन को और अधिक हथियार उपलब्ध कराने का वादा किया गया। फ्रांस और ब्रिटेन लंबी दूरी की क्रूज–मिसाइलें यूक्रेन में भेजेंगे। ब्रिटेन, लड़ाकू और ढुलाई–वाहन, टैंकों के लिए गोला–बारूद और उपकरण–मरम्मत के लिए 6.5 करोड़ डॉलर भी प्रदान करेगा। पैट्रियट–मिसाइल लांचर और पैदल सेना से लड़ने वाले कई वाहनों सहित, 77 करोड़ डॉलर का सहायता पैकेज जर्मनी भेजेगा। नॉर्वे सैन्य सहायता के तौर पर 10 अरब डॉलर भेजेगा। 11 देशों का गठबंधन, डेनमार्क में यूक्रेनी पायलटों को, एफ–16 लड़ाकू विमान को उड़ाने का प्रशिक्षण शुरू करेगा और इसके लिए रुमानिया में एक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया जाएगा। जी–7 देशों ने यूक्रेन को रूस से दीर्घकालिक सुरक्षा की गारंटी देने का फ़ैसला किया है।

नाटो के शिखर सम्मेलन से कुछ दिन पहले, अमरीकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने घोषणा की थी कि अमरीका यूक्रेन को क्लस्टर–बमों की सप्लाई करेगा। अमरीका द्वारा वियतनाम, लाओस और कंबोडिया के लोगों के ख़िलाफ़ और हाल ही में इराक के युद्ध में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल किया गया था। क्लस्टर बम एक विशाल इलाके में, सैकड़ों छोटे बम गिराते हुए लोगों को अंधाधुंध निशाना बनाते हैं। इन क्लस्टर बमों को गिराए जाने के परिणामस्वरूप, कई वर्षों बाद, बच्चों सहित हजारों नागरिकों की मौतें हुई हैं। अमरीका तथा नाटो के कई सदस्य देशों सहित 123 देशों ने क्लस्टर बमों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाये हुये हैं। लेकिन, नाटो के इस शिखर सम्मेलन ने यूक्रेन को क्लस्टर बमों से लैस करने के अमरीकी फ़ैसले का विरोध नहीं किया।

अमरीका ने, अमरीकी क़ानून की उस धारा का इस्तेमाल किया है जो क्लस्टर बमों पर लागू प्रतिबंध का उल्लंघन करने की अनुमति राष्ट्रपति को देता है। राष्ट्रपति बाइडन ने अपने फ़ैसले को उचित ठहराने के लिये यह तर्क दिया है कि यूक्रेन और नाटो के तोपखाने का गोला–बारूद ख़त्म हो गया है, इसलिए क्लस्टर बमों को इस्तेमाल करने के अलावा उनके पास और "कोई विकल्प नहीं" है। 9 जुलाई को, कंबोडिया के प्रधानमंत्री हुन सेन ने कहा कि "यूक्रेनी लोगों का शुभचिंतक होने के नाते, मैं क्लस्टर बमों की आपूर्ति करने वाले अमरीकी राष्ट्रपति से और इन बमों के प्राप्तकर्ता के रूप में यूक्रेनी राष्ट्रपति से, युद्ध में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल न करने का आह्वान करता हूं, क्योंकि इसके असली शिकार यूक्रेनी लोग होंगे"। उन्होंने अपने देश के अनुभव को याद किया, जहां अमरीका ने 1970 के दशक में लाखों बम गिराए थे। युद्ध समाप्त होने के लंबे समय बाद, आने वाले दशकों में, इन्हीं बमों के कारण कंबोडिया में हजारों लोग मारे गए या उन्हें गंभीर चोटें लगीं।

नाटो के शिखर सम्मेलन में, अमरीका और पश्चिमी यूरोप के हथियार निर्माताओं के प्रमुख प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इन हथियार निर्माताओं के प्रतिनिधि, सम्मेलन में भाग ले रहे राज्यों से यह चाहते थे कि उनके द्वारा बनाये गये हथियारों की ख़रीद की गारंटी उन्हें मिले ताकि वे अधिकतम मुनाफ़ा कमा सकें। अमरीका ने अन्य सभी सदस्य देशों के सैन्य बजट को, उनके सकल घरेलू उत्पाद का कम से कम दो प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए, सहमति की सुनिश्चित की, इस चेतावनी के साथ कि आने वाले वर्षों में इसे और भी बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, यह भी फ़ैसला लिया गया कि सुरक्षा खर्च का कम से कम 20 प्रतिशत, सैन्य–हार्डवेयर के अत्याधुनिक तकनीकी विकास पर होगा। सैन्य खर्च में हुई इस जबरदस्त वृद्धि का भारी बोझ, इन देशों के मज़दूर वर्ग और लोगों पर डाला जाएगा।

नाटो के शिखर सम्मेलन ने, रूस की सीमा से सटे देशों में नाटो के सुरक्षा बलों की अग्रिम तैनाती को और बढ़ाने का निर्णय लिया। इसने घोषणा की कि आठ बहुराष्ट्रीय सैन्य दल लड़ने के लिए पहले से ही मौजूद हैं। ज़रूरत पड़ने पर रूस के ख़िलाफ़ चल रहे इस युद्ध में एक पल में ही लाखों सैनिकों को झोंकने की तैयारी नाटो कर रहा है। वह न केवल यूक्रेन में बल्कि रूस की पूरी सीमा पर, आर्कटिक क्षेत्र से लेकर दक्षिण में काला सागर तक, ज़मीन, समुद्र और हवा में रूस के ख़िलाफ़ युद्ध की तैयारी कर रहा है। शिखर सम्मेलन द्वारा जारी की गयी विज्ञप्ति में रूस को परमाणु हथियारों के साथ–साथ सामूहिक विनाश के अन्य हथियारों की धमकी दी गई है।

शिखर सम्मेलन में फिनलैंड, नाटो के एक नये सदस्य के रूप में शामिल हुआ। तुर्कीये ने, स्वीडन की नाटो सदस्यता पर अपनी ओर से विरोध नहीं किया। जॉर्जिया, मोल्दोवा और बोस्निया–हर्जेगोविना के नेता, नाटो के साथ अपना सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए। यह बिलकुल स्पष्ट है कि अमरीका, पूरे यूरोप को अपने सैन्य नियंत्रण में लाने की कोशिश कर रहा है।

शिखर सम्मेलन ने, उत्तरी अफ्रीका और पश्चिम एशिया में हस्तक्षेप बढ़ाने की नाटो की योजनाओं का खुलासा किया। इसने अफ्रीका के विभिन्न देशों में चल रहे गृह युद्धों के लिए रूस को दोषी ठहराया और इन युद्धों में अमरीका, फ्रांस और ब्रिटेन की भूमिकाओं को छिपाया।

नाटो के शिखर सम्मेलन में एशिया–प्रशांत यानी जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के नाटो "सहभागियों" की सरकारों के प्रमुखों ने भी भाग लिया। इसने नाटो के संचालन के क्षेत्र को एशिया–प्रशांत क्षेत्र तक विस्तारित करने की अमरीका की योजना का खुलासा किया।

शेष पृष्ठ 3 पर

बातचीत से समाधान निकालने की कूटनीतिक पहल को बार–बार नाकाम किया गया

यूक्रेन में बातचीत से समाधान के लिए पहली कूटनीतिक पहल, मिन्स्क समझौते 1 और 2, 2014 और 2015 में किये गए थे। समझौते पर यूक्रेन की सरकार और डोनेट्स्क और लुगांस्क के नए स्वतंत्र गणराज्यों के बीच हस्ताक्षर किए गये थे और जिनमें फ्रांस, जर्मनी और रूस गारंटर के रूप में शामिल थे।

फ्रांस, जर्मनी और यूक्रेन के नेताओं द्वारा किये गये समझौतों के पीछे यही इरादा था कि अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी और अन्य देशों को यूक्रेन को फिर से हथियारबंद करने के लिये कुछ समय मिल सके। आठ वर्षों तक, केवल रूस, डोनेट्स्क और लुगांस्क उस समझौते का पालन करते रहे, जबकि यूक्रेन को पूर्वी यूक्रेन के लोगों के ख़िलाफ़ और अधिक अपराध करने के लिए सशस्त्र किया गया। इसके साथ–साथ, अमरीका ने यूक्रेन को नाटो सैन्य गठबंधन का सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहन दिया।

रूस ने दिसंबर 2021 में, अमरीका, नाटो के अन्य सदस्यों और यूरोपीय संघ से संपर्क किया और सभी पक्षों के सुरक्षा हितों का सम्मान करते हुए, कुछ समझौतों पर बातचीत करने का प्रस्ताव रखा। रूस ने इस आश्वासन की मांग की कि यूक्रेन नाटो में शामिल नहीं होगा। रूस के उस अनुरोध को इस आधार पर ख़ारिज़ कर दिया गया कि किसी भी राष्ट्र को, "असूल" के आधार पर अपनी पसंद के किसी भी सैन्य गठबंधन में शामिल होने का "अधिकार" है।

एक बार फरवरी 2022 में जब रूस ने यूक्रेन को नाज़ी गतिविधियों और सैन्यीकरण से मुक्त करने के उद्देश्य से, विशेष सैन्य अभियान शुरू किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यूक्रेन से रूस की सुरक्षा को कोई ख़तरा नहीं है, तब बेलारूस ने तुरंत उसी महीने यूक्रेन और रूस के बीच वार्ता की मेजबानी की। यूक्रेन के वार्ताकारी टीम के एक सदस्य, डेनिस किरीव की कथित तौर पर यूक्रेन की घरेलू खुफिया एजेंसी द्वारा कीव में खुलेआम हत्या कर दी गई। इस प्रकार यह वार्ता निरस्त हो गई।

इसके बाद, तुर्कीये ने मार्च 2022 में एक बार फिर से वार्ता की मेजबानी की। एक समझौते पर लगभग सहमति हो गयी थी। अमरीका और ब्रिटेन के निर्देश पर, जेलेंस्की इस समझौते से अलग हो गए। यूक्रेन के नियो–नाज़ी मिलिशिया ने खुलेआम धमकी दी कि अगर रूस के साथ समझौता हुआ तो राजधानी कीव पर मार्च किया जाएगा और जेलेंस्की को फांसी दे दी जाएगी।

मई 2023 में चीन ने अपनी एक पहल शुरू की। एक शीर्ष चीनी राजनयिक ली हुई ने चीन की "वैश्विक सुरक्षा पहल" और "यूक्रेन में शांति के लिए 12 सूत्रीय योजना" पर चर्चा करने के लिए कीव, वारसॉ, बर्लिन, पेरिस और ब्रसल्स के साथ–साथ मॉस्को का दौरा किया"। अमरीका, ब्रिटेन और अन्य नाटो देशों ने चीनी प्रस्ताव को ख़ारिज कर दिया।

जून 2023 में, दक्षिण अफ्रीका, जाम्बिया, कोमोरोस, कांगो–ब्रेजाविल, मिस्र, सेनेगल और यूगांडा के नेता, यूक्रेन और रूस के बीच शांति पहल के प्रस्ताव के साथ आगे आए। उन्होंने आह्वान किया कि :

- बातचीत और कूटनीतिक माध्यमों से शांति;
- जल्द से जल्द बातचीत शुरू करना;
- दोनों पक्षों में अंतर्विरोध का कम होना;
- संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार राज्यों और लोगों की संप्रभुता सुनिश्चित करना;
- सभी पक्षों के लिए सुरक्षा की गारंटी;
- दोनों तरफ से अनाज और उर्वरक निर्यात को सुरक्षित करना;
- पीड़ितों के लिए मानवीय सहायता;
- युद्धबंदियों (पी.ओ.डब्ल्यू.) की अदला–बदली और बच्चों की वापसी;
- युद्धोपरांत पुनर्निर्माण और पीड़ितों को सहायता, और
- अफ्रीकी देशों के साथ घनिष्ठ संपर्क।

रूस ने इस अफ्रीकी पहल का स्वागत किया। लेकिन यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की, नाटो की शर्तों पर अड़े रहे और घोषणा की कि जब तक रूसी सेनाएं पीछे नहीं हटतीं तब तक कोई शांति वार्ता नहीं होगी।

न्यूनतम समर्थन मूल्य ...

पृष्ठ 1 का शेष

चार्ट ख से पता चलता है कि छः में से पांच वर्षों में अरहर दाल के लिए मिलने वाली क़ीमत महाराष्ट्र, कर्नाटक और गुजरात में एम.एस.पी. से काफी कम थी। साल 2015–16 में आपूर्ति की भारी कमी की वजह से अरहर दाल की क़ीमतों में तेज़ी आई थी। जबकि किसानों को उत्पादन की कमी के कारण ख़रीद–क़ीमतों में वृद्धि से आंशिक रूप से थोड़ा ही फ़ायदा मिला था। इन क़ीमतों में बढ़ोतरी का फ़ायदा लने वाले प्रमुखतः वे थे, जो ऐसे उत्पादों के थोक और खुदरा व्यापार पर हावी थे।

चार्ट ग से पता चलता है कि सरसों के लिए मिलने वाली क़ीमतें, राजस्थान और मध्य प्रदेश में छः साल में से चार साल में, उत्तर प्रदेश में छः साल में से तीन साल व पश्चिम बंगाल में छः साल में से दो साल में, एम.एस.पी. से कम थी। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि ये अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध किसानों को मिलने वाली क़ीमतें हैं, जो राज्य विनियमित बाज़ारों में अपने उत्पादों के ले जाकर बेचने का खर्च उठा सकते हैं।

सूरजमुखी की क़ीमतों के बारे में जिन वर्षों के आंकड़े उपलब्ध हैं, उसके लिये चार्ट घ से पता चलता है कि पिछले छः वर्षों में हरेक वर्ष के लिये एफ.एच.पी., एम.एस.पी. से काफी कम थी।

किसानों ने अपने अनुभव से सीखा है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा, वास्तविकता में उन्हें कोई सहारा नहीं देती। इसीलिए, वे एम.एस.पी. पर ख़रीद की गारंटी की मांग करते आये हैं।

चार्ट ख – अरहर की क़ीमतें एम.एस.पी. और एफ.एच.पी.

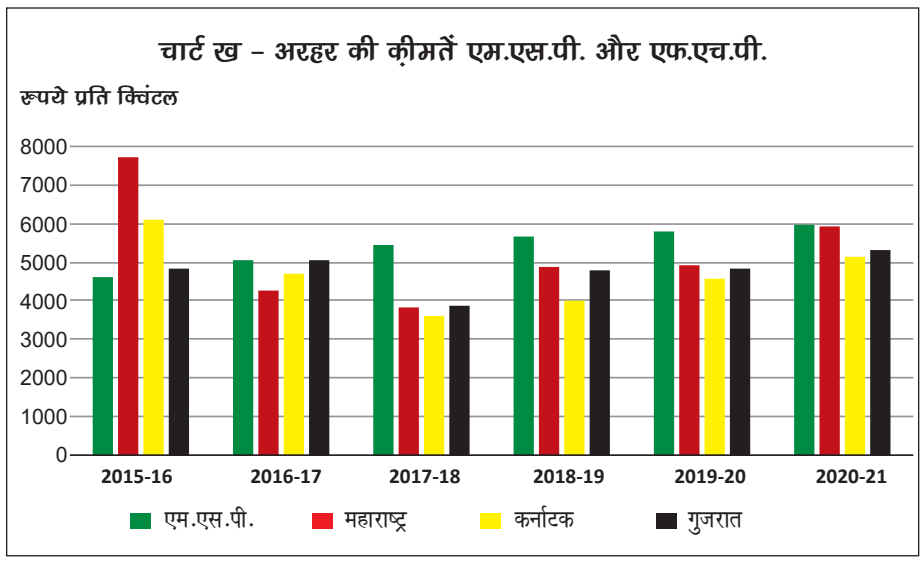

एम.एस.पी. की गारंटी दी जा सके इसके लिये, सैद्धांतिक रूप से दो संभावित तरीक़े हैं। पहला उपाय हैं कि – एक ऐसा क़ानून बनाया जाये जो इन कृषि उत्पादों की एम.एस.पी. से कम पर ख़रीदी को, सबके लिए गैर–क़ानूनी बताता हो। दूसरा उपाय है कि यह सुनिश्चित किया जाए कि इन उत्पादों का बड़ा हिस्सा सार्वजनिक एजेंसियों द्वारा एम.एस.पी. पर ख़रीदा जाए।

गन्ने की खेती करने वाले किसानों का अनुभव मौजूदा व्यवस्था में क़ानूनी गारंटी की कमी को दर्शाता है। क़ानून के अनुसार, निजी मालिकी वाली चीनी मिलों को गन्ने की आपूर्ति के 14 दिनों के भीतर किसानों को केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित 'उचित और लाभकारी मूल्य' का भुगतान करना आवश्यक होता है। कुछ राज्यों में, उन्हें 'राज्य द्वारा बताई गई क़ीमतें' भी चुकानी होती हैं जो एम.एस.पी. से अधिक होती हैं। लेकिन, चीनी मिलों के मालिक पूंजीपति किसानों को किये जाने वाले भुगतान करने में अक्सर बहुत देरी करते हैं। वे किसी सज़ा के डर के बिना क़ानून का खुल्लम खुल्ला उल्लंघन करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि मौजूदा राज्य मशीनरी पूंजीपतियों को कोई सज़ा नहीं देगी।

सार्वजनिक ख़रीदी करना ही, एम.एस.पी. की गारंटी देने का एकमात्र सुनिश्चित और जांचा हुआ तरीक़ा है, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि किसानों को उनकी फ़सल के लिये एम.एस.पी. से कम क़ीमत न मिले। यह पंजाब और हरियाणा में गेहूं व धान और महाराष्ट्र में कपास के अनुभव से साबित होता है। निजी व्यापारियों को किसी भी कृषि उत्पाद के लिए एम.एस.पी. का भुगतान करने के लिए कम से कम तभी मजबूर किया जा सकता है, अगर उस कृषि उत्पाद का बड़ा हिस्सा किसी सार्वजनिक एजेंसी द्वारा एम.एस.पी. पर ख़रीदा जाता हो। साल 2020–21 में भारतीय कपास निगम ने कच्चे कपास के कुल उत्पादन की 350 लाख गांठों से ज्यादा में से, 88 लाख गांठों की ख़रीद की थी। इतनी कम ख़रीद भी यह सुनिश्चित करने के लिए काफी थी कि उस वर्ष अधिकांश बाज़ारों में, निजी व्यापारियों द्वारा दी जाने वाली क़ीमत एम.एस.पी. पर थी या उससे अधिक थी।

किसानों को निजी व्यापारियों द्वारा लूटे जाने से रोकने का एकमात्र तरीक़ा सार्वजनिक ख़रीद करना ही है। सभी खाद्य फ़सालों और गैर–खाद्य फ़सलों के उत्पाद की ख़रीद के लिए एक सार्वजनिक ख़रीद प्रणाली बनाने की जिम्मेदारी केंद्र और राज्य सरकारों सहित, हिन्दोस्तानी राज्य को लेनी चाहिए। सार्वजनिक ख़रीद प्रणाली को एक सार्वजनिक वितरण व्यवस्था से जोड़ा जाना चाहिए जो सभी के लिए, उपभोग की सभी आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता किफ़ायती दाम पर सुनिश्चित करने के लिए बनायी गयी हो।

केंद्र और राज्य सरकारें, सभी कृषि उपजों की सार्वजनिक ख़रीद को सुनियोजित तरीक़े से करने से इसलिये इनकार कर रही हैं क्योंकि सरकारों द्वारा उठाया गया ऐसा क़दम, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति को नियंत्रित करने के इजारेदार पूंजीपतियों के एजेंडे के ख़िलाफ़ है।

एम.एस.पी. पर गारंटीकृत ख़रीद के लिए किसानों द्वारा किया जाने वाला संघर्ष, कृषि क्षेत्र को इजारेदार पूंजीवादी लालच को पूरा करने की दिशा के ख़िलाफ़ चलाया जा रहा संघर्ष है। यह उन लोगों के लिए एक सुरक्षित आजीविका सुनिश्चित करने का संघर्ष है, जो पूरे देश के लिए भोजन सामग्री का उत्पादन करते हैं। किसानों के इस संघर्ष को मज़दूर वर्ग और देश के सभी लोगों को बिना शर्त समर्थन देना चाहिये।

http://hindi.cgpi.org/23758

चार्ट ग – सरसों की क़ीमतें एम.एस.पी. और एफ.एच.पी.

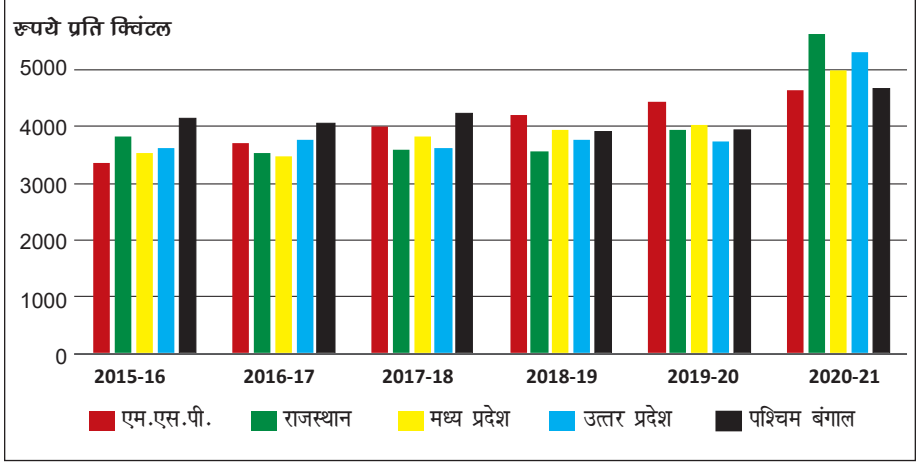

चार्ट घ – सूरजमुखी की क़ीमतें एम.एस.पी. और एफ.एच.पी.

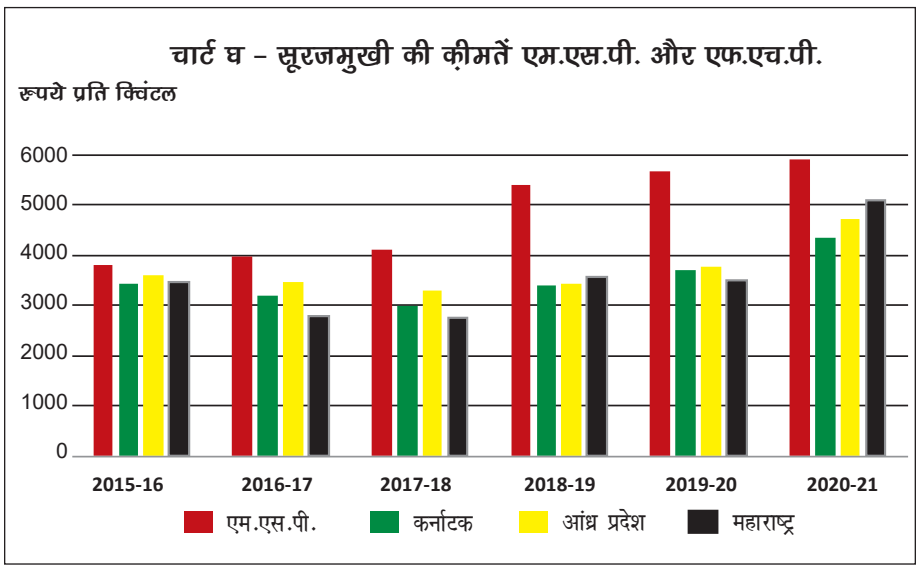

खेत की फ़सल की क़ीमतें

किसान अपनी उपज को वितरण श्रृंखला के विभिन्न स्थलों पर बेचते हैं। किसानों के लिए अपनी उपज को बेचने का सबसे निकटतम स्थान उनका गांव है, जहां पर किसान अपनी उपज को बिचौलियों को बेचते हैं और ये बिचौलिये उसे थोक बाज़ार तक पहुंचाते हैं।

किसानों की उपज के लिए जो क़ीमतें उन्हें मिलती हैं, उसे सरकार फार्म हार्वेस्ट प्राइस (एफ.एच.पी.) कहती है। सरकार के अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय (डी.ई.एस.) द्वारा एफ.एच.पी. के आंकड़े एकत्र किये जाते हैं।

हरेक जिले में हर प्रमुख फ़सल के लिए, प्रत्येक तहसील से एक, दो या तीन गांवों में से एक निश्चित संख्या में प्रतिनिधि गांवों का चयन किया जाता है। यह चयन इस बात पर निर्भर करता है कि उस तहसील में, वह फ़सल किस हद तक उगाई गई है। कटाई के मौसम की शुरुआत के बाद, जब ख़रीद–बिक्री सबसे अधिक होती है उस अवधि के दौरान, जिस क़ीमत पर उत्पादकों द्वारा फ़सल की उपज बेची जाती है, उसे हरेक प्रतिनिधि गांव में हर शुक्रवार को सरकार के नामित रिपोर्टर द्वारा दिये गये फॉर्म में दर्ज़ किया जाता है।

सरकार का रिपोर्टर कई बार गांव में जाकर वहां पर किसानों द्वारा, बिचौलियों को बेची जाने वाली फ़सल की क़ीमत को दर्ज़ नहीं करता, बल्कि वह राज्य द्वारा विनियमित ए.पी.एम.सी. मंडी जैसे थोक बाज़ार में किसानों को मिलने वाली क़ीमतों को रिकॉर्ड करता है। फ़सल का एफ.एच.पी. का अनुमान, मंडी में उद्धृत थोक मूल्यों से परिवहन और अन्य विपणन शुल्क घटाकर लगाया जाता है।

इस प्रकार एफ.एच.पी. ज्यादातर किसानों द्वारा प्राप्त उन क़ीमतों को दर्शाता है जो अपने उत्पादों को थोक बाज़ारों तक ले जाने का इंतजाम कर पाते हैं, न कि किसानों द्वारा प्राप्त उन क़ीमतों को, जो मंडी में बेचने के बजाय, अपने गांवों में आने वाले बिचौलियों को बेचते हैं। परिणामस्वरूप, हक़ीक़त में किसानों द्वारा प्राप्त औसत मूल्य एफ.एच.पी., से कम होता है।

नाटो का शिखर सम्मेलन

पृष्ठ 2 का शेष

यह घोषणा करते हुए कि चीन नाटो के हितों के लिए एक चुनौती है, शिखर सम्मेलन में वर्तमान समय में विभिन्न नाटो–शक्तियों के बीच इस बात पर चल रहे मतभेद का भी खुलासा हुआ कि चीन के ख़िलाफ़ कितना आगे तक जाना है। समाचार रिपोर्टों के अनुसार, एक फ्रांसीसी अधिकारी ने 9 जुलाई को कहा कि फ्रांस "सैद्धांतिक रूप से नाटो के संचालन–क्षेत्र को एशिया–प्रशांत में विस्तारित करने के पक्ष में नहीं है।" अधिकारी ने कहा, 'नाटो का मतलब उत्तर–अटलांटिक–संधि–संगठन है।' उन्होंने कहा कि फ्रांस, नाटो में, जापान को शामिल करने के प्रस्ताव का समर्थन नहीं करेगा।

यूरोप और दुनिया में इस समय एक बेहद ख़तरनाक स्थिति सामने आ रही है। अमरीकी साम्राज्यवाद, यूरोप, एशिया और पूरी दुनिया पर अपना निर्विवाद प्रभुत्व स्थापित करने के आक्रामक अभियान पर अग्रसर है। वह उन सभी राज्यों को नष्ट करना चाहता है जो इस लक्ष्य को प्राप्त करने के उसके रास्ते में रोड़ा बन रहे हैं। उसने जानबूझकर रूस को नष्ट करने और यूरोप को कमज़ोर करने के लिए, यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध भड़काया है। वह जिस रास्ते पर चल रहा है, वह मानव जाति को एक नए विश्व युद्ध में धकेल सकता है, जो पिछले दो विश्व युद्धों से कई गुना अधिक विनाशकारी होगा। दुनिया के मज़दूर वर्ग और लोगों को, अमरीका के नेतृत्व वाले युद्धखोर नाटो गठबंधन के प्रयासों को नाकाम करने की सख़्त ज़रूरत है।

http://hindi.cgpi.org/23800

मध्यप्रदेश में नर्सें हड़ताल पर

10 जुलाई, 2023 की दोपहर से पूरे मध्यप्रदेश की नर्सें, नर्सिंग आफिसर्स एसोसिएशन की अगुवाई में अपनी 10 सूत्रीय मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं।

खंडवा, मंदसौर, सतना, बुरहानपुर, छतरपुर, विदिशा, खारगौन सहित मध्यप्रदेश के जिला अस्पतालों से लेकर ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले दसों–हजार नर्सें हड़ताल पर हैं।

नर्सें अपनी मांगों के समर्थन में, जिला अस्पतालों पर धरना दे रही हैं, कहीं रैली निकाल रही हैं। कहीं ज़ोरदार प्रदर्शन करके जुलूस निकाल रही हैं। वे सरकार की मज़दूर–विरोधी नीतियों की निंदा कर रही हैं और मज़दूर बतौर अपने अधिकारों के समर्थन में नारे बुलंद कर रही हैं।

हड़ताल पर जाने से पहले, नर्सिंग ऑफिसर्स एसोसिएशन ने सरकार को 3 जुलाई को ज्ञापन के साथ चेतावनी दी थी कि यदि उनकी मांगें नहीं मानी जाती हैं तो वे अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चली जाएंगी। 8 जुलाई को एक घंटे की हड़ताल करके उन्होंने अपना विरोध दर्ज़ करवाया था।

मध्य प्रदेश के हरदा में नर्सेस ऐसोसियेशन की शाखा द्वारा काम बंद हड़ताल आंदोलन

नर्सिंग ऑफिसर्स एसोसिएशन का कहना है कि वेतन विसंगति, पदोन्नति और नए पदों पर भर्ती करने जैसी मांगें लंबे समय से की जा रही हैं। अब नर्सें अपनी मांगें मनवाने के लिए चरणबद्ध आंदोलन के ज़रिए सरकार तक अपनी बात पहुंचा रही हैं।

चरणबद्ध आंदोलन के बारे में एसोसियेशन ने बताया कि 3 जुलाई, 2023 को मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया गया था। 4 जुलाई को प्रेसवार्ता करके विभाग तक अपनी बात पहुंचायी गई। 5 तथा 6 जुलाई को नर्सों ने अपने आंदोलन की ओर ध्यान दिलाने के लिए अपनी ड्यूटी के अलावा, क्रमशः एक घंटा तथा दो घंटा ज्यादा ड्यूटी की। 7 जुलाई को जिला स्तर पर मीटिंग की। 8 जुलाई को जिला स्तर पर 1 घंटे का प्रदर्शन किया।

आंदोलित नर्सों की मुख्य मांगें इस प्रकार हैं :

- नर्सिंग श्रेणी की वेतन विसंगति को दूर किया जाए। नर्सिंग ऑफिसर वेतनमान ग्रेड पे 2,800 रुपए से बढ़ाकर ग्रेड पे 4,200 रुपए किया जाए। सीनियर नर्सिंग ऑफिसर/ट्यूटर की ग्रेड पे 3,600 रुपए से बढ़ाकर ग्रेड पे 4,600 रुपए किया जाए। मेट्रन ग्रेड पे 4,200 रुपए से बढ़ाकर ग्रेड पे 4,800 रुपए किया जाए।
- रात्रिकालीन आकस्मिक चिकित्सा भत्ता स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सकों को 500 रुपए प्रति रात्रि दिया जाता है। इनके साथ संलग्न नर्सेस व अन्य पैरामेडिकल कर्मचारियों को भी 300 रुपए प्रति रात्रि आकस्मिक चिकित्सा भत्ता दिया जाए।
- ग्वालियर एवं रीवा मेडिकल कॉलेज में जी.एन.एम. नर्सिंग को तीन एवं बी.एस.सी. नर्सिंग को चार वेतन वृद्धि दी गयी है। यही मापदंड शेष मेडिकल कॉलेजों पर लागू हो।
- नर्सिंग स्टूडेंट का स्टाइपेंड 3,000 रुपए से बढ़ाकर 8,000 रुपए किया जाए।
- प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा विभाग में स्वशासी (आटोनोमस) संस्थानों के अंतर्गत कार्यरत कर्मचारियों को सातवें वेतनमान का लाभ जनवरी 2016 से दिया जाए।
- शासकीय सेवा में सीधी भर्ती में तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के पदों पर चयन होने पर तीन वर्ष की परिवीक्षा अवधि एवं 70 प्रतिशत, 80 प्रतिशत, 90 प्रतिशत मानदेय नियम को निरस्त करके, पूर्व की भांति 100 प्रतिशत मानदेय दिया जाए।
- पुरानी पेंशन योजना (ओ.पी.एस.) लागू की जाए।

http://hindi.cgpi.org/23779

झारखण्ड के ग्रामीण कार्यकर्ता संघर्ष के रास्ते पर

झारखंड राज्य के ग्रामीण स्तर के कार्यकर्ता (जनसेवक) अपनी मांगों को लेकर, झारखंड राज्य जनसेवक संघ की अगुवाई में, 12 जुलाई, 2023 से रांची के नेपाल हाउस स्थित कृषि सचिवालय के सामने अनिश्चितकालीन धरना दे रहे हैं।

आपको बताते चलें कि झारखंड में 2011–12 में 1,836 जनसेवकों की नियुक्ति हुई थी। इन सेवकों को विभिन्न जिलों के अलग–अलग प्रखंडों में नए कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीक को ज़मीनी स्तर पर किसानों तक पहुंचाने का दायित्व सौंपा गया था। इसके लिए इन्हें वेतनमान 5,200–20,200 ग्रेड–पे 2,400 रुपए दी जाती थी। इसके अलावा, 2012 से पहले नियुक्त लगभग 600 जनसेवक भी हैं।

हाल में, 2012 में नियुक्त जनसेवकों का ग्रेड पे 2,400 से घटाकर 2,000 कर दिया गया है। वेतन में कमी का आदेश 28 अप्रैल, 2023 को निकाला गया है। नौकरी के 11 साल बाद वेतनमान में कमी से जनसेवकों का जीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। अभी भी 1,400 ग्रामीण प्रसार कार्यकर्ता (जनसेवक) कार्यरत हैं।

जनसेवक संघ के प्रांतीय महामंत्री श्री लोकेश कुमार ने मज़दूर एकता कमेटी को बताया कि जनसेवकों का मूल कार्य कृषि संबंधित योजनाओं को धरातल पर उतारना है। परंतु प्रखंड विकास पदाधिकारी हमें अन्य सभी विभागों के कार्य जैसे आवास योजना, मनरेगा, सांख्यिकी, निर्वाचन, सहायक, निरिक्षक, सहायक गोदाम प्रबंधक सहित विभिन्न पर्यवेक्षीय पदों के कार्य करने को कहते हैं। यह जनसेवक श्रेणी को तकनीकी संवर्ग से गैर तकनीकी बनाने की साज़िश है।

उन्होंने अपने संघर्ष पर रोशनी डालते हुए बताया कि अपनी 11 सूत्री मांग को लेकर धरना और भविष्य में अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने की सूचना प्रशासन को दी। उन्होंने काला बिल्ला लगाकर काम किया। जिला स्तर पर धरना दिया। कृषि मंत्री, कृषि निदेशक, राज्यपाल इत्यादि के समक्ष क्रमवार धरना देकर उन्हें अपनी मांगों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने हड़ताल के दौरान जिला में धरना किया, एक माह बाद राज्यस्तरीय धरना किया और अब रात–दिन राज्यस्तरीय धरना–प्रदर्शन हो रहा है।

ग्रेड पे घटाए जाने के विरोध में तथा अपनी 11 सूत्री मांगों के समर्थन में चल रहे संघर्ष को झारखंड के मज़दूर संगठनों व यूनियनों ने अपना समर्थन दिया है।

झारखंड राज्य जनसेवक संघ का कहना है कि धरना तब तक जारी रहेगा जब तक वेतन कम किए जाने के आदेश को रद्द नहीं किया जायेगा और लंबित सभी मांगों पर वार्ता करके उनका समाधान नहीं किया जायेगा।

http://hindi.cgpi.org/23789

पाठकों की प्रतिक्रिया

गिग मज़दूरों का शोषण

संपादक महोदय,

इस लेख को पढ़ने के बाद यह बात स्पष्ट हो गई है कि पूंजीपतियों का समूह आखिरकार एक नये व्यवसाय को कैसे अपने एकाधिकार ताक़त से सिर्फ अपने भविष्य के लिए इस नये क्षेत्र (गेट इट गोइंग) का उपयोग करके अपने व्यक्तिगत मुनाफ़े बनाने और फलने–फूलने के लिए पूरी तरह से इस्तेमाल करता है।

इन सेवाओं में लगी प्रमुख कंपनियां बड़े पूंजीपतियों की हैं यह बात बिल्कुल सच है।

गिग मज़दूर एक नयी कार्य प्रणाली के तहत काम करते हैं, उन्हें यकीन दिलाया जाता है कि आप अपने काम के मालिक हैं, जब मर्ज़ी काम करें और नियमित तौर पर एक अच्छी आय घर लेकर जायें। देश के नौजवानों को बड़े–बड़े सपने दिखाए जाते हैं। देश के अंदर इतनी बेरोज़गारी है कि देश का नौजवान इस पूंजीवादी समाज में आसानी से इन सबका शिकार बन जाता है। इसमें काम करने वाले मज़दूरों की संख्या लगातार बढ़ रही है, यह इस बात का सबूत है। इन कर्मचारियों को ये बोला जाता है कि आपको अधिक पढ़ा–लिखा होने की ज़रूरत नहीं है। इससे एक ऐसा तबका तैयार किया जा रहा है जो देश के बड़े पूंजीपतियों के लिये अधिक मुनाफ़ा सुनिश्चित कर रहा है।

इस तरह के व्यवसाय में बड़े पूंजीपति शुरू में केवल एक डीजिटल सेट–अप तैयार करते हैं। बाद में जिनको काम पर रखा जाता है, उन्हें इस काम को करने के लिये एक तरह से खुद ही निवेश करना पड़ता है, जैसे कि अपना फोन, अपनी गाड़ी और उसके लिये अपना पेट्रोल तथा अपना घर इत्यादि। कंपनियां सिर्फ एक प्लेटफार्म प्रदान करती हैं।

जितने भी मज़दूर इस क्षेत्र में काम करते हैं उन्हें किसी तरह की कोई भी सामाजिक सुरक्षा या अन्य सुविधाएं नहीं दी जाती हैं। एक तरह से उनसे 24 घंटे काम लिया जाता है। उदाहरणतः अगर उनके फोन का सेट–अप ऑन है, और किसी वक्त भी आर्डर आता है, ख़ासकर डीलीवरी क्षेत्रों में, तो डीलीवरी करने वाला आर्डर को कैंसल नहीं कर सकता। अगर वह ऐसा करता है तो उसकी रेटिंग नकारात्मकता की ओर जाएगी। इसका असर यह होगा कि वह एक गैर–ज़िम्मेदार मज़दूर की सूची में शामिल हो जायेगा। इससे उसकी आय में कटौती होगी। अतः हम इसे 24 घंटे काम करना ही कहेंगे।

यही नियम अन्य क्षेत्रों पर भी लागू होता है। जैसा कि इस लेख में बताया गया है कि गिग मज़दूरों की श्रेणी में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, जिससे पूंजीपति इन मज़दूरों के श्रम का शोषण करके खुद की तिजौरियों को भरते ही जा रहे हैं।

इस तरह से काम करवाने पर पूंजीपति श्रम–क़ानूनों से बच जाता है और श्रम क़ानूनों के लचीलेपन का पूरा इस्तेमाल करता है। इससे निश्चित ही पूंजीपति मालिक अपने स्थायी मज़दूरों की संख्या को कम करेगा, जिससे वह अपने मुनाफ़े को और अधिक बढ़ाएगा।

पंडित,
दिल्ली

विशाखापट्टनम में दवा कंपनी में भयानक आग से मज़दूर मृत व घायल :

पूंजीपतियों की अधिक से अधिक मुनाफ़ों की हवस का नतीजा

30 जून, 2023 की सुबह को आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में एक निजी दवा कंपनी, साहिथी फार्मा प्राईवेट लिमिटेड, की प्रयोगशाला में रिएक्टर विस्फोट की वजह से भीषण आग लग गई। यह दवा कंपनी अनाकापल्ली इलाके के अचुतपुरम औद्योगिक विशेष आर्थिक क्षेत्र (एस.ई.ज़ेड.) में है। इस आग में दो लोगों की मौत हो गयी है। सात लोग घायल हुए हैं, जिनमें से चार लोग गंभीर रूप से झुलस गए हैं।

प्रयोगशाला में लगी आग इतनी भयंकर थी कि इसका धुआं उस इलाके में कई किलोमीटर तक फैल गया था। ख़बरों के मुताबिक आग के समय कंपनी के अंदर कई लोगों के फंसे होने की आशंका थी।

देश के अधिकांश मज़दूरों को बहुत ही भयानक परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। काम के दौरान हर साल दसों–हजारों मज़दूरों की मौत हो जाती है और लाखों गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं। कारखानों और गोदामों में आग लगना, भूमिगत खदानों के धंसने से मज़दूरों का उनमें फंसना, भट्ठियों में विस्फोट, निर्माण स्थलों पर काम करने वाले मज़दूरों की मौत, रेलवे ट्रैक पर काम के दौरान ट्रैकमैनों की मौतें, सीवर की सफ़ाई के दौरान मज़दूरों की मौतें, आदि हमारे देश में हर रोज़ की घटनाएं हैं। कार्यस्थल पर उचित सुरक्षा उपायों के आभाव के कारण जो मज़दूर गंभीर तौर पर घायल हो जाते हैं और

काम करने के क़ाबिल नहीं रहते, उन्हें इस दर्दनाक हालत में बिना किसी मुआवज़े के नौकरी से निकाल दिया जाता है। सरकार के पास ऐसी दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों की संख्या के कोई आधिकारिक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि लाखों–लाखों अपंजीकृत कारखानों, कार्यालयों, दुकानों और निर्माण स्थलों में काम करने वाले मज़दूरों की हालतों के बारे में सरकार कोई परवाह नहीं करती है। पूंजीपतियों की नज़र में मज़दूरों की जान की कोई क़ीमत नहीं होती है।

वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था के चलते, पूंजीपतियों के हितों की सेवा करने वाला हिन्दोस्तानी राज्य कार्यस्थल पर मज़दूरों के लिए सुरक्षित काम की हालतों को सुनिश्चित करने से इनकार करता है, क्योंकि वह इसे पूंजीपतियों के अधिकतम मुनाफ़ों को सुनिश्चित करने के रास्ते में एक बाधा मानता है। अपने अधिक से अधिक मुनाफ़ों की हवस को पूरा करने के लिए, पूंजीपति मज़दूरों के काम की हालतों पर कम से कम खर्च करना चाहते हैं और सुरक्षा पैमानों को नज़रंदाज़ करते हैं। राज्य उन्हें ऐसा करने में पूरी छूट देता है। श्रम क़ानूनों का उल्लंघन करने वाले कंपनी मालिक ज्यादातर मामलों में, कम से कम सज़ा भुगतकर बच जाते हैं।

हम मज़दूरों को यह सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष को तेज़ करना होगा कि हरेक मज़दूर को सुरक्षित काम की हालतों की क़ानूनी गारंटी प्राप्त हो और उन क़ानूनों को लागू करने के तंत्र भी हों। यह संघर्ष, अर्थव्यवस्था को पूंजीपतियों के हित में चलाने की वर्तमान दिशा को बदलकर, उसे लोगों के सुख–सुरक्षा को सुनिश्चित करने की नयी दिशा दिलाने के संघर्ष का हिस्सा है। जब तक राज्य सत्ता पूंजीपति वर्ग के हाथ में होगी, तब तक वह मज़दूरों को अपने अधिकारों से वंचित करने के लिए इस सत्ता का इस्तेमाल करेगा। इसलिए, अपने अधिकारों की हिफ़ाज़त के लिए हमें अपने संघर्ष को पूंजीवादी हुकूमत की जगह पर मज़दूरों–किसानों की हुकूमत स्थापित करने के राजनीतिक उद्देश्य से आगे बढ़ाना होगा। जब मज़दूर वर्ग के हाथों में राजनीतिक सत्ता होगी, तब मज़दूर वर्ग, पूंजीवादी लालच की बजाय मानवीय ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, अर्थव्यवस्था को नयी दिशा दिलाने में सक्षम होगा।

http://hindi.cgpi.org/23735

प्रोटेरियल (हिताची) इंडिया लिमिटेड के मज़दूरों का संघर्ष

मज़दूर एकता कमेटी के संवाददाता की रिपोर्ट

गुड़गांव के आई.एम.टी. मानेसर स्थित, प्रोटेरियल (हिताची) इंडिया लिमिटेड के ठेका मज़दूरों ने अपनी मांगों को लेकर 30 जून, 2023 को कंपनी परिसर के अंदर ही हड़ताल शुरू कर दी थी। यह हड़ताल 6 जुलाई, 2023 के बाद से भूख हड़ताल में बदल गयी है।

कंपनी परिसर के अंदर 'ए' जनरल और 'बी' शिफ्ट के लगभग 200 मज़दूर हड़ताल पर बैठे हुए हैं। 'सी' शिफ्ट वाले मज़दूर कंपनी गेट के बाहर धरने पर बैठे हुए हैं।

संघर्षरत मज़दूरों ने मांग की है कि 240 दिनों से अधिक समय तक नौकरी पूरी कर लेने वाले मज़दूरों की नौकरी को स्थाई किया जाए। 15 प्रतिशत की वार्षिक वेतन वृद्धि और कंपनी की छुट्टी नीतियों को लागू किया जाए, काम की स्थिति में सुधार किया जाये, आदि। उनकी ये मांगें पिछले एक साल से कंपनी प्रबंधन के पास लंबित हैं। हरियाणा के श्रम विभाग ने इसका कोई समाधान नहीं निकाला है।

30 जून को हड़ताल तब शुरू हुई, जब मनमाने तरीक़े से तीन ठेका मज़दूरों की शिफ्ट को बदला गया। इससे पहले, पिछले डेढ़ साल से मज़दूरों की मांगों का समर्थन कर रहे तीन यूनियन नेताओं सहित लगभग 40 ठेका मज़दूरों को 'उत्पादन में बाधा डालने और अनुशासनात्मक मुद्दों' के आरोप पर मई में प्रबंधन द्वारा निकाल दिया गया था। वर्तमान हड़ताल में की गई मांगों के अलावा, निलंबित कर्मचारियों की बहाली करने की मांग भी शामिल है।

कंपनी के बाहर धरने पर बैठे कर्मचारी, कंपनी परिसर के अंदर धरने पर बैठे कर्मचारियों को भोजन भेजते थे, लेकिन कंपनी इसमें अड़चन डालती थी। कंपनी कभी तो केवल सूखा खाना यानी पैक खाना अंदर ले जाने की अनुमति देती थी तो कभी केले जैसी चीजों को अंदर ले जाने से मना कर देती थी। अंदर भेजे जाने

वाले भोजन को हड़ताली मज़दूरों को समय पर उपलब्ध नहीं किया जाता था। इससे परेशान होकर मज़दूरों ने भूख हड़ताल पर जाने का फ़ैसला किया।

इसके अलावा, कंपनी प्रबंधन ने मज़दूरों को प्रताड़ित करने के लिए धरना स्थल के पंखों को बंद कर दिया है। इसकी वजह से, भीषण गर्मी के कारण, कंपनी के भीतर हड़ताल पर बैठे मज़दूरों की तबीयत ख़राब हो गयी है। दो मज़दूरों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा है। कंपनी प्रबंधन, श्रम विभाग तथा पुलिस, तीनों मिलकर हड़ताली मज़दूरों पर दबाव बना रहे हैं कि मज़दूर कंपनी परिसर को खाली कर दें।

प्रोटेरियल इंडिया, पहले हिताची मेटल्स के नाम से जानी जाती थी। यह जापानी पूंजीपतियों की अगुवाई में संचालित एक बहुराष्ट्रीय कंपनी है। यह कंपनी मानेसर, आई.एम.टी. प्लाट नम्बर 94–95 पर स्थित है। यह कंपनी सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स, पावर सिस्टम, सामाजिक बुनियादी ढांचे और औद्योगिक उपकरण में कारोबार करती है। कंपनी का मानेसर प्लांट इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के पुर्जे बनाने का काम करता है।

कंपनी में कुल 46 पक्के और 270 ठेका मज़दूर काम करते हैं। सभी अस्थाई मज़दूरों के हड़ताल में शामिल होने की वजह से उत्पादन पूरी तरह ठप्प हो गया है। स्थायी मज़दूर इस हड़ताल में शामिल नहीं हैं। यूनियन का आरोप है कि प्रबंधन ने उत्पादन को बनाए रखने के लिए लगभग 25 नए अस्थायी मज़दूरों को नियुक्त किया है। यूनियन ने इसका सख्त विरोध किया है।

यूनियन ने बताया कि कंपनी ने तीन से सात साल पुराने मज़दूरों को भी ठेके पर रखा हुआ है। यहां मज़दूरों को बहुत ही कम वेतन – 12,000 से 13,000 रुपये के बीच – दिया जाता है। ये मज़दूर उत्पादन में कुशलता तथा अतिकुशलता वाला काम करते हैं, लेकिन इनको सहायक मज़दूर जितना ही वेतन दिया जाता है। यहां पर समान काम के लिये समान वेतन तक लागू नहीं है।

यूनियन ने मांगें पूरी होने तक संघर्ष को जारी रखने का संकल्प प्रकट किया है।

इंकलाबी मज़दूर केन्द्र ने प्रोटेरियल (हिताची) मज़दूर यूनियन के जायज़ संघर्ष का समर्थन किया है। साथ ही बोलसोनिका यूनियन सहित गुड़गांव मानेसर की अन्य यूनियनें भी समर्थन में आगे आई हैं।

मज़दूर एकता कमेटी, प्रोटेरियल (हिताची) मज़दूर यूनियन के संघर्ष का पूरा समर्थन करती है।

http://hindi.cgpi.org/23769

कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी का प्रकाशन

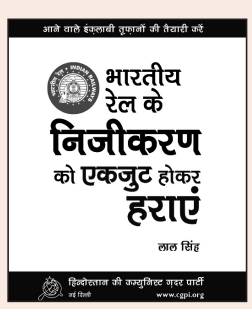

यह पुस्तिका कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी के महासचिव, कामरेड लाल सिंह द्वारा 13 मई, 2018 को दिल्ली में पार्टी की एक सभा में प्रस्तुत की गई थी।

इस पुस्तिका को मंगाने के लिये संपर्क करें : लोक आवाज़ पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ई–392, संजय कालोनी, ओखला फेस–2, नई दिल्ली 110020

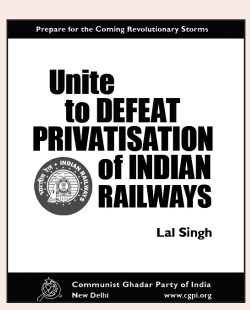

फोन : 09810167911, 9868811998, डाक खर्च सहित 40 रुपये भेजें

मज़दूर एकता लहर

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का अख़बार

RNI No.- 45893/86 Postal Regd. No. DL(S)-01/3177/2021-23
LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT U (SE)-38/2022-23
Posting Date at DLPSO, 16 & 17 July, 2023, Date of publish - 16 July, 2023

To
.....
.....
.....
.....
.....
.....

स्वामी लोक आवाज़ पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मधुसूदन कस्तूरी की तरफ से, ई–392 संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस–2, नई दिल्ली 110020, से प्रकाशित। शुभम इंटरप्राइजेज, 260 प्रकाश मोहल्ला, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली 110065 से मुद्रित। संपादक– मधुसूदन कस्तूरी, ई–392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस–2, नई दिल्ली 110020
email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com, Mob. 9810167911

अवितरित होने पर इस पते पर वापस भेजें :
ई–392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस–2, नई दिल्ली 110020

WhatsApp
9868811998

हनुमानगढ़ में किसानों का संघर्ष

राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के किसान पानी की मांग को लेकर लगातार संघर्ष करते आ रहे हैं।

अमर सिंह ब्रांच नहर के अवैध मोघों के विरोध में संघर्ष

उपतहसील रामगढ़ के किसानों और अमरसिंह ब्रांच के तहत आने वाले अन्य दूसरे गांवों के किसानों ने सिंचाई के लिये पर्याप्त पानी की आपूर्ति व अवैध मोघों को बंद करने की मांग को लेकर, 26 जून से धरना शुरू कर दिया है। यह धरना रामगढ़ उपतहसील के पास, नोहर–भादरा सड़क के किनारे किया जा रहा है।

अमरसिंह ब्रांच नहर में अवैध मोघों की वजह से इस क्षेत्र के कई गांवों की फ़सलें प्रभावित होती हैं। अवैध मोघों के ज़रिये बहुत ज्यादा पानी किसानों से छीन लिया जाता है। बिजाई के समय पर्याप्त पानी न मिलने के कारण फ़सलों की बुआई में देरी हो जाती है। किसान सिंचाई की इस समस्या को दूर करने की मांग करते आये हैं कि अवैध मोघों को साईज़, डिजाईन और ड्राइंग के आधार पर लगाया जाये।

विदित है कि किसानों ने 18 जून को अपनी मांगों से संबंधित एक ज्ञापन नायब तहसीलदार को सौंपा था। ज्ञापन में स्पष्ट कहा गया था कि अगर एक सप्ताह के भीतर मोघों की समस्याओं को पूरी तरह हल नहीं किया गया तो आंदोलन को तेज़ किया जायेगा। एक सप्ताह बाद भी जब प्रशासन ने कोई कार्यवाही नहीं की तो किसानों ने धरना शुरू कर दिया।

धरने का आयोजन अमरसिंह ब्रांच संघर्ष समिति भादरा–नोहर ने किया है। इस धरने में अमरसिंह ब्रांच के तहत आने वाले संबंधित गांवों के किसान हिस्सा ले रहे हैं। धरने में प्रत्येक दिन अलग–अलग गांवों के किसान क्रमिक रूप से शामिल हो रहे हैं। इसमें अभी तक रामगढ़, बरवाली, परलीका, गोगामेढ़ी, ढिलकी जाटान, दीपलाना, बडबिराना, नेठराना, आदि गांवों के किसान शामिल हो चुके हैं।

रामगढ़ में लोक राज संगठन के सर्व हिन्द उपाध्यक्ष हनुमान प्रसाद शर्मा सहित सभी कार्यकर्ता धरने में लगातार शामिल हो रहे हैं और अपनी मांगों की आवाज़ को बुलंद कर रहे हैं।

प्रशासन किसानों की समस्याओं के प्रति हमेशा उदासीन रहता है। समस्याओं को हल करने की दिशा में कोई क़दम नहीं उठाता है। किसान अपनी मांगों को लेकर धरने में डटे हुये हैं।

भाखड़ा नहर क्षेत्र के किसानों ने कलेक्ट्रेट और एसपी कार्यालय का घेराव किया

सिंचाई के पानी के अभाव में भाखड़ा क्षेत्र के किसान खरीफ फ़सलों की बिजाई नहीं कर पा रहे हैं। आक्रोशित किसानों ने 12 मई को कलेक्ट्रेट का घेराव किया। इस दौरान जिला प्रशासन व सिंचाई विभाग के अफ़सर वार्ता के लिए भी पहुंचे, लेकिन अधिकारियों से कोई आश्वासन न मिलने पर, आक्रोशित किसान कलेक्ट्रेट के मुख्य द्वार पर बेमियादी पड़ाव डालकर बैठ गए। 22 मई को सरकार ने घोषित किया कि और पानी छोड़ा जायेगा, जिसके बाद पड़ाव को समाप्त किया गया।

किसानों के इस आंदोलन का समर्थन करते हुये भाखड़ा नहर क्षेत्र से जुड़ी मंडियों के व्यापारियों ने मंडियों को बंद रखा और किसी भी वस्तु की बिक्री नहीं होने दी।

लोक राज संगठन के सर्व हिन्द उपाध्यक्ष, श्री हनुमान प्रसाद शर्मा ने आंदोलित किसानों को संबोधित किया और उनके संघर्ष का समर्थन किया।

इस क्षेत्र के किसान बड़ी संख्या में, इस प्रदर्शन में शामिल हुए। सभा स्थल पर उपस्थित किसानों के प्रतिनिधियों ने कहा कि सरकार हर बार किसानों के साथ धोखा करती है। किसानों को समय पर सिंचाई का पानी देने में आनाकानी करती है। इस वजह से बिजाई समय पर नहीं हो पाती है।

भाखड़ा नहर क्षेत्र के किसानों ने पहले कलेक्ट्रेट गेट को जाम कर दिया। कलेक्ट्रेट गेट के आगे बेमियादी पड़ाव डालने के बाद किसानों ने शाम के समय एसपी कार्यालय के गेट के आगे भी बेमियादी पड़ाव डाला।

रामगढ़ रेलवे स्टेशन पर ट्रेन को रुकवाने और स्टेशन के नवीनीकरण के लिए संघर्ष

उपतहसील रामगढ़ के किसान स्थानीय रेलवे स्टेशन पर जयपुर–लोहारू स्पेशल पेसेन्जर ट्रेन को रुकवाने की मांग को लेकर संघर्ष कर रहे हैं। साथ ही साथ किसानों ने रामगढ़ स्टेशन के नवीकरण की मांग को लेकर किये गए संघर्ष में जीत हासिल की है।

पानी चोरी रोकने और रेलगाड़ी को स्टेशन पर रूकवाने के लिये ज्ञापन देते हुए

हनुमानगढ़ में भाखड़ा नहर क्षेत्र के किसानों का कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन

ट्रेन को रुकवाने का संघर्ष

लोक राज संगठन की अगुवाई में उपतहसील रामगढ़ के किसानों और स्थनीय निवासियों ने जयपुर बठिंडा यात्री गाड़ी के चालक को मुख्यमंत्री के नाम से एक ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में कहा गया है कि रेलवे द्वारा दिनांक 11 मई, 2023 से जयपुर लोहारू स्पेशल पेसेन्जर गाड़ी संख्या 09603/04 का विस्तार बठिंडा तक किया है। पैसेन्जर गाड़ी होने के बाबजूद भी छोटे स्टेशनों पर न रोककर, रेलवे ने ग्रामीण स्टेशनों के साथ सौतेला व्यवहार किया है।

ज्ञापन के अनुसार, रामगढ़ गांव तहसील का मुख्यालय है तथा श्रीगंगानगर–सादुलपुर ट्रैक पर सबसे बड़ी ग्राम पंचायत है। रामगढ़ का स्टेशन छोटा होने के बावजूद भी, यहां के आसपास के आधा दर्जन गांवों के लोग यहां से प्रतिदिन यात्रा करते हैं। जबकि रामगढ़ स्टेशन पर टिकटों की बुकिंग अनुपशहर, खिनानिया, जैसे स्टेशनों से भी ज्यादा है, फिर भी इस पैसेन्जर गाड़ी को इस स्टेशन पर नहीं रोका जा रहा है। इसलिये आमजन की भावनाओं को ध्यान में रखते हुये गाड़ी संख्या 09603/04 जयपुर–बठिण्डा–जयपुर का रामगढ़ स्टेशन पर रुकना सुनिश्चित किया जाये।

ज्ञापन में चेतावनी दी गई है कि अगर इस रेलगाड़ी को रामगढ़ स्टेशन पर नहीं रोका गया तो समस्त क्षेत्रवासियों के द्वारा रेल रोको आन्दोलन शुरू किया जायेगा। यदि आन्दोलन उग्र रूप लेता है तो उसका पूरा दायित्व रेलवे विभाग का होगा।

स्टेशन के नवीनीकरण के संघर्ष में जीत

मज़दूर एकता लहर में लगातार रिपोर्ट किया जाता रहा है कि रामगढ़ उपतहसील के लोग मांग करते रहे हैं कि यहां के रेलवे स्टेशन का नवीनीकरण किया जाये।

इस संघर्ष के परिणामस्वरूप रामगढ़ स्टेशन के नवीनीकरण का काम शुरू हो गया है। यहां के टिकट घर को बेहतर बनाया जा रहा है। एक उपरिगामी पुल का निर्माण किया जा रहा है। इस पुल के बनने से पटरियों को पार करने में लोगों को किसी भी असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही साथ किसी की जान को ख़तरा भी नहीं रहेगा।

एक और समस्या जिसकी मांग लोगों ने सरकार के सामने रखी थी कि यहां के प्लेटफोर्मों की ऊंचाई को बढ़ाया जाये, ताकि लोगों को गाड़ियों में चढ़ने के लिये परेशानियों का सामना न करना पड़े। प्लेटफॉर्मों की ऊंचाई बढ़ाने का काम भी शुरू कर दिया गया है।

इस अहम संघर्ष में जीत हासिल होने से रामगढ़ स्टेशन से यात्रा करने वाले हजारों यात्रियों को लाभ होगा।

http://hindi.cgpi.org/23751

मज़दूर एकता लहर का वार्षिक शुल्क और अन्य प्रकाशनों का भुगतान आप बैंक खाते और पेटीएम में भेज सकते हैं

आप वार्षिक ग्राहकी शुल्क (150 रुपये) सीधे हमारे बैंक खाते में या पेटीएम क्यूआर कोड स्केन करके भेजें और भेजने की सूचना नीचे दिये फोन या वाट्सएप पर अवश्य दें।

खाता नाम–लोक आवाज़ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स
बैंक ऑफ महाराष्ट्र, न्यू दिल्ली, कालका जी
खाता संख्या–20066800626, **ब्रांच नं.**–00974
IFSCode: MAHB0000974, मो.–9810167911
वाट्सएप और पेटीएम नं.-9868811998
email: mazdoorektalehar@gmail.com